❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर
MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें9650183336, 9540040339

वर्ष 47, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 दिसम्बर, 2023 से रविवार 17 दिसम्बर, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी से आर्यसमाज के प्रतिनिधि मंडल की शिष्टाचार भेंट

200वें जन्मोत्सव-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव, टंकारा में पधारने का दिया निमन्त्रण

सत्य के प्रकाशक, महान समाज सुधारक एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर 10-12 फरवरी, 2024 में टंकारा में होने वाले तीन दिवसीय ज्ञान ज्योति पर्व - स्मरणोत्सव महासम्मेलन के आयोजन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी आमन्त्रित करने हेतु गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के नेतृत्व में आर्यसमाज के प्रतिनिधि मंडल ने दिनांक 7 दिसम्बर, 2023 को शिष्टाचार भेंट की और स्मरणोत्सव समारोह का निमन्त्रण दिया। - **शेष पृष्ठ 7 पर**

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती दौपदी मुर्मू जी को टंकारा में होने वाले ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव के निमन्त्रण रूप में 200वीं जयन्ती का प्रतीक चिह्न (लोगो) प्रदान करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकृत्री समिति के प्रधान श्री पूनम सूरी तथा गायत्री मन्त्र भेंट करते ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य एवं आचार्य देवव्रत जी। इस अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति जी से चर्चा करते प्रतिनिधि मंडल के सदस्य सर्वश्री आचार्य डॉ. देवव्रत, पद्मश्री पूनम सूरी, सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुरेशचन्द्र आर्य, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री धर्मपाल आर्य एवं श्री विनय आर्य।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज की स्थापना के 150वें वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों हेतु दिल्ली आयोजन समिति, दिल्ली एवं दिल्ली आस-पास के प्रमुख संगठनों, आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, आर्य वीर-वीरांगना दल के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, पुरोहितों एवं पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों की

विशेष बैठक : 17 दिसम्बर, 2023 ★ दोपहर 2 बजे ★ आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1

जैसा कि आप जानते हैं कि प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 12 फरवरी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के विश्वव्यापी दो वर्षीय आयोजनों के शुभारम्भ के साथ ही वर्ष 2025 में आर्यसमाज स्थापना का 150वां वर्ष तथा वर्ष 2026 में स्वामी श्रद्धानन्द जी का 100वां बलिदान वर्ष भी मनाए जाने का लक्ष्य प्रधानमन्त्री जी ने हमें दिया था। उसी श्रृंखला में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का **200वां जन्मोत्सव - ज्ञान ज्योति पर्व - स्मरणोत्सव महासम्मेलन** का आयोजन **10-11-12 फरवरी, 2024 को जन्मभूमि टंकारा** में आयोजित किया जाएगा। इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति द्वारा एक **विशेष बैठक 200वीं जयन्ती की दो वर्षीय कार्ययोजना** की पूर्ण प्रस्तुति तथा विभिन्न कार्यक्रमों के निर्धारण और उसमें विभिन्न संगठनों की भूमिका निर्धारित करने के लिए **17 दिसम्बर, 2023 (रविवार)** को **दोपहर 2 से 5 बजे** तक **आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1,** नई दिल्ली में आमन्त्रित की गई है।

इस विशेष बैठक में सारे देश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रमुख अधिकारी सम्मिलित होंगे, साथ ही अति विशिष्ट महानुभावों का मार्गदर्शन हमें प्राप्त होगा। अतः समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, दल्ली एवं दिल्ली आस-पास के प्रमुख संगठनों, आर्य वीर-वीरांगना दल के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, पुरोहितों, पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों से अनुरोध है कि बैठक में अवश्य सम्मिलि होवें और 200वीं जयन्ती के विशाल आयोजनों में अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। सभी महानुभावों को बैठक हेतु निमन्त्रण/ऐजेण्डा व्हाट्सएप्प से भेजा गया है। धन्यवाद सहित

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	सुरेन्द्र रैली	सतीश चड्डा	योगेश मुंजाल	अजय सहगल	विजय लखनपाल	राजेन्द्र वर्मा
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	महामन्त्री	का. प्रधान	प्रधान	मन्त्री	मन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य		श्री महर्षि द.स्मारक ट्रस्ट, टंकारा		आ.समाज ग्रेटर कैलाश-1, न.दि.	

स्वामी श्रद्धानन्द
97 वाँ बलिदान दिवस
सोमवार 25 दिसम्बर 2023

भव्य शोभायात्रा व सार्वजनिक सभा
शोभायात्रा का प्रारम्भ : स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

सार्वजनिक सभा : मध्याह्न 12:30 से 3:30 बजे
रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

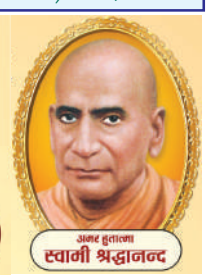

देववाणी-संस्कृत

मानव शरीर रूपी यज्ञशाला

वेद-स्वाध्याय

सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वपन्जौसत्रसदौ च देवौ।।-यजुः. 34/55
ऋषिः कण्वः।। **देवता** - अध्यात्मं प्राणाः।। **छन्दः** भुरिगजगती।।

शब्दार्थ - शरीरे सप्त ऋषयः प्रतिहिताः = शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं **सप्त सदं अप्रमादं रक्षन्ति** = सार हैं जो कि इस सद (स्थन, यज्ञशाला) की प्रमाद-रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। **स्वपतः सप्त आपः लोकं ईयुः** = सुषुप्तावस्था में ये सात ज्ञानप्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं, **तत्र च** = तो वहां भी **सत्रसदौ** = यज्ञ में बैठे रहने वाले **अस्वप्नजौ** = कभी न सोनेवाले **देवौ** = दो देव **जागृतः** = जागते रहते हैं।

विनय - यह शरीर भगवान ने तुझे यज्ञ करने के लिए दिया है। यह देव पवित्र यज्ञशाला है। इसमें बैठे हुए सात ऋषि भगवान् का यजन कर रहे हैं। आंख देख रही है, कान सुन रहा है, नासिका सूंघ रही है, त्वचा स्पर्श कर रही हैं, जिह्वा रस ले रही है, मन मनन कर रहा है और बुद्धि निश्चय कर रही है। ये सातों ऋषि शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श, रस का ज्ञान करते हुए, मनन और अवधारण करते हुए अपनी इन ज्ञान-क्रियाओं द्वारा भगवान् का यजन कर रहे हैं। ये ज्ञानशक्तियां हमारे अन्दर भगवद्यजन के लिए ही रखी गई हैं हमारी प्रत्येक ज्ञान-प्राप्ति भगवत्प्राप्ति के लक्ष्य से ही होनी चाहिए और इन सातों ज्ञानेन्द्रियों (बाह्य और अन्दर के करणों) के साथ एक-एक प्राणशक्ति भी काम कर रही है, जिन्हें सात शीर्ष प्राण करते हैं। ये सात प्राण इस 'सद्' की- इस यज्ञशाला की-रक्षा पूरी सावधानता के साथ, बिना प्रमाद किये कर रहे हैं। इस प्रकार इस यज्ञशाला में निरन्तर यह यज्ञ चल रहा है। हम हमेशा कुछ-न कुछ ज्ञान (अनुभव) करते रहते हैं-देखते, सुनते या मनन आदि करते रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी यह देखना-सुनना बन्द नहीं होता। हां, सुषुप्ति-अवस्था में जब इन सात ऋषियों के 'आपः' (ज्ञानप्रवाह) सुषुप्ति के लोक मे लीन हो जाते हैं, हमें कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा होता, तब क्या यह यज्ञ भङ्ग हो जाता है? नहीं, तब भी दो देव जागते हैं। ये दोनों देव कभी भी सोने वाले नहीं, इन्हें कभी नींद दबा नहीं सकती, अतः ये 'सत्रसदौ' तब भी यज्ञ में बैठे हुए जागते रहते हैं। ये हैं-(1) आत्म-चैतन्य और (2) प्राण। इन सात ऋषियों को दर्शनशक्ति देनेवाला देव एक है और इन रक्षक प्राणों को प्राण-शक्ति देने वाले दूसरा है। ये दोनों देव-ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के देव-तब भी जागते रहते हैं और ज्ञान तथा कर्म द्वारा चलने वाले इस यज्ञ की इन दोनों शक्तियों को निरन्तर कायम रखते हैं, बल्कि पुष्ट करते रहते हैं, जब तक जीवन है तब तक चलता रहता है।

परन्तु क्या हम इस शरीर-यज्ञशाला को यज्ञशाला की भांति पवित्र रखते हैं? कहीं यज्ञ करने वाले ये सात ऋषि ज्ञान क्रिया द्वारा भगवद्यजन करना छोड़कर अपने ऋषित्व से भ्रष्ट तो नहीं हो जाते?

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बच्चों और युवाओं के मन-मस्तिष्क पर मोबाइल और इंटरनेट का बढ़ता नशा

कितना खतरनाक है ये 12 सैकेण्ड का जहर

सोशल मीडिया ने लोगों की जिन्दगी को जितना आसान बनाया है, उतना ही मुश्किल भी कर दिया है। इसमें कोई शक नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों को लोगों से जोड़ने का काम किया है, लेकिन तोड़ने का भी काम किया है। वर्षों सोशल मीडिया का प्रयोग करने के बाद हम इस बात को दावे के साथ कह सकते है कि एक क्रन्तिकारी डिजिटल प्लेटफार्म अब लोगों को मानसिक रूप पंगु बना रहा है। यानि कैसे हमें खुद की तुलना दूसरों से करने के लिए मजबूर कर देता है? शायद लोग अभी सोशल मीडिया की चकाचौंध में इसे महसूस ना कर पा रहे हो, लेकिन शोध बता रहे हैं कि हमें पता भी नहीं चलता और हम तनाव, चिन्ता और डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं।

आज इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में अब लोगों को शोर्ट विडियो पसंद आने लगे है, क्योंकि उनके पास टाइम की कमी कहो या लम्बी विडियो बोर करती है। इसके लिए इन्स्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब से लेकर बहुत सारे प्लेटफार्म हैं। जब विडियो देखना शुरू करते हैं तो एक के बाद एक विडियो सामने आने लगते हैं और यूजर्स देखते चले जाते हैं। कब उनका एक या दो घंटा इसमें व्यतीत हो गया उन्हें पता ही नहीं चला। जबकि वो शोर्ट विडियो इस कारण देखने चला था कि लम्बी विडियो देखने का उसके पास टाइम नहीं था।

अब ध्यान दीजिये इसमें होता क्या है? नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंस और तंत्रिका विज्ञान संस्थान के डॉक्टर इस पर शोध कर रहे हैं, उन्होंने कुछ दिलचस्प उदहारण दिए हैं, वो कहते हैं कि लोग सिर्फ एक 'यूजर' हैं और ध्यान रखिये 'यूजर' शब्द का इस्तेमाल सिर्फ दो धंधों में होता है, एक इंटरनेट में और दूसरा ड्रग में, उन्होंने जो उदहारण दिए वो चौकाने वाले हैं क्योंकि हो सकता है यूजर्स आपके भी आस-पास हो आपके घर में भी हो।

पुनीत परिवार का इकलौता बच्चा है, दसवीं क्लास में पुनीत के 95 प्रतिशत अंक आये थे। घर में खुशी का माहौल था तो पुनीत को परिवार ने एक फोन गिफ्ट किया। पुनीत ने भी तुरंत एफबी से लेकर इन्स्टा तक अपने अकाउंट बनाये और शॉर्ट विडियो देखने की लत लग गई। शॉर्ट विडियोज वॉच करने से पुनीत के दिमाग के कॉग्निटिव फंक्शन बुरी तरह प्रभावित हुए, अब पुनीत को कुछ भी लंबे समय तक याद नहीं रहता। पुनीत के पैरेंट्स की चिन्ता तब और बढ़ी, जब उसके 12वीं के बोर्ड एग्जाम में 50 फीसदी अंक भी नहीं आ आए, जबकि वह क्लास का टॉपर था।

पुनीत कोई इकलौता बच्चा नहीं, जो इस तरह की परेशानी का शिकार है, 14 साल के मनीष कुमार के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसके पैरेंट्स ने देखा कि उनका बच्चा पढ़ा में लगातार कमजोर होता जा रहा है। उन्होंने मनीष से बात की तो पता चला कि वह क्लास में ध्यान ही नहीं लगा पाता। काउंसलिंग में सामने आया कि इसके पीछे वजह थी, शॉर्ट विडियोज, उसका अटेंशन स्पैन 5 मिनट से भी कम हो गया था, इसमें सुधार के लिए लगातार काउंसलिंग सेशन और ऐक्टिविटीज कराई जा रही है ताकि वह शोर्ट विडियो के दुष्प्रभाव से बाहर आ सके।

असल में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंस के डॉक्टर बता रहे है कि कि मस्तिष्क का वह हिस्सा, जो निर्णय लेने और आवेग नियंत्रण के लिए जिम्मेदार है, वो इस उम्र में पूरी तरह से विकसित नहीं होता है। इसलिए बच्चे इन

कई अध्ययनों में सामने आया है कि इंसानों का औसत स्पैन अटेंशन तेजी से नीचे गिरा है, यह साल 2000 में करीब 12 सेकेंड था, जो हाल के वर्षों में घटकर 8 सेकेंड ही बचा है। अटेंशन स्पैम का मतलब है, आप किसी काम में बिना भटके कितनी देर तक अपना ध्यान लगाए रख सकते हैं। ये सब क्यों हो रहा है दरअसल लंबे वीडियोज में, शॉर्ट विडियोज से एकदम उलट मामला है, लंबे विडियोज में कहानी और कैरेक्टर का डिवेलपमेंट पर अधिक जोर होता है, वहीं, शॉर्ट विडियोज में मुख्य रूप से बिहैवियर या ऐक्शन बेस्ड चीजें होती हैं, यानि इससे दिमाग तुरंत रिजल्ट का आदी हो जाता है जो बच्चों को शॉर्ट टेंपर्ड और शॉर्ट स्पैन बनाता है। वो शॉर्ट अटेंशन स्पैन हमारी मेमोरी, भाषा और दिमाग के विकास पर बुरा असर डालता है।, इससे प्रभावित बच्चे लंबे समय तक टिककर पढ़ नहीं पाते, उनकी बोली में भाषा में अजीब से बदलाव आ जाते हैं। साथ ही, उनके दिमाग भी ठीक तरह से विकसित नहीं हो पाता क्योंकि दिमाग की मेहनत लगभग समाप्त हो जाती है उसे जो भी मिल रहा है वो एकदम तैयार माल है।

विडियोज के वचिंग पीरियड को कंट्रोल नहीं कर पाते, और ना ये तय कर पाते हैं कि क्या देखना है?

इसके अलावा कई अध्ययनों में सामने आया है कि इंसानों का औसत स्पैन अटेंशन तेजी से नीचे गिरा है, यह साल 2000 में करीब 12 सेकेंड था, जो हाल के वर्षों में घटकर 8 सेकेंड ही बचा है। अटेंशन स्पैम का मतलब है, आप किसी काम में बिना भटके कितनी देर तक अपना ध्यान लगाए रख सकते हैं। ये सब क्यों हो रहा है दरअसल लंबे वीडियोज में, शॉर्ट विडियोज से एकदम उलट मामला है, लंबे विडियोज में कहानी और कैरेक्टर का डिवेलपमेंट पर अधिक जोर होता है, वहीं, शॉर्ट विडियोज में मुख्य रूप से बिहैवियर या ऐक्शन बेस्ड चीजें होती हैं, यानि इससे दिमाग तुरंत रिजल्ट का आदी हो जाता है जो बच्चों को शॉर्ट टेंपर्ड और शॉर्ट स्पैन बनाता है। वो शॉर्ट अटेंशन स्पैन हमारी मेमोरी, भाषा और दिमाग के विकास पर बुरा असर डालता है।, इससे प्रभावित बच्चे लंबे समय तक टिककर पढ़ नहीं पाते, उनकी बोली में भाषा में अजीब से बदलाव आ जाते हैं। साथ ही, उनके दिमाग भी ठीक तरह से विकसित नहीं हो पाता क्योंकि दिमाग की मेहनत लगभग समाप्त हो जाती है उसे जो भी मिल रहा है वो एकदम तैयार माल है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

भारतीय संस्कारों की आत्मा है – गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली

(वर्ल्ड हिन्दू काँग्रेस-2023 बैंकॉक में आचार्या डॉ. सुमेधा, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा का सम्बोधन)

थाइलैंड की राजधानी बैंकॉक में तीन दिवसीय World Hindu Congress (WHC-2023) का आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रत्येक 4 वर्ष में अलग-अलग देश में होता है। इस वर्ष बैंकॉक में हुए इस आयोजन में 61 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत जी व माता अमृतानंदमयी ने भी सम्मेलन को संबोधित किया। काँग्रेस का ध्येय वाक्य था- 'जयस्य आयतनं धर्मः' - Dharma, the abode of victory अर्थात् धर्म ही विजय का निवास स्थान है।

Yet another towering personality whose pivotal role in revitalising Hindu Dharma and rejuvenating Hindu society deserves our admiration and recognition- This World Hindu Congress seeks an opportunity to acknowledge and honour his invaluable contribution." सम्मेलन में अलग-अलग कॉन्फ्रेंसिज के लिए निर्धारित अलग-अलग सभागारों को विशेष नाम दिए गए थे, जिसमें World Education Conference Hall को ऋषि के सम्मान में विश्व कल्याण की भावना को भर दिया जाता था। भारत के संस्कार की आत्मा हैं ये गुरुकुल जहाँ संस्कृति की उपासना ही आधार तत्त्व है और उस संस्कृति का मूल है देववाणी संस्कृत।

संस्कृत शब्द का अर्थ है- सुशोभित, अलंकृत। यह मानव को अलंकृत करती है। भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की झलक संस्कृत शब्द में ही दिख जाती है, जहां 'सम्' का अर्थ है उचित अथवा सत्य, 'सुट्' का आगम भूषण अर्थात् सुंदर अर्थ में है तथा 'कृत' पद कार्य की सिद्धावस्था को दर्शाता है, जैसे शिव

अर्थात् संस्कृत में न जाने ऐसा क्या माधुर्य छिपा है कि हम विदेशी जन सदैव इससे अभिभूत रहते हैं।

संस्कृति व संस्कारों को अपने अंदर संजोकर रखने वाली इस संस्कृत भाषा को बालिकाओं को पढ़ाना बहुत आवश्यक है; क्योंकि बालिकाओं को संस्कृत के माध्यम से संस्कृति की शिक्षा देकर पूरे परिवार को शिक्षित व संस्कारित किया जा सकता है, परन्तु मैंने अपने बाल्यकाल में नारियों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार होते हुए देखा। उन्हें पढ़ने-लिखने एवं पालन-पोषण आदि के पुरुषों के समान अधिकार नहीं थे। किन्तु

24-26 नवंबर 2023 तक आयोजित इस कार्यक्रम में अर्थव्यवस्था, शिक्षा, मीडिया, राजनीति, नारी सशक्तिकरण, युवा शक्ति तथा संगठनात्मक गतिविधियाँ इन सात विषयों पर विचार मंथन चला। इन क्षेत्रों से संबंधित अनेक मूर्धन्य विशेषज्ञों ने अलग-अलग सात कॉन्फ्रेंसिज में अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए। जिसमें World Education Conference में मुझे वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस कॉन्फ्रेंस में आमंत्रित अन्य प्रमुख वक्ताओं में श्री सुरेश सोनी, इतिहासकार विक्रम संपत, वैज्ञानिक और लेखक आनंद रंगनाथन, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के ट्रस्टी व कोषाध्यक्ष स्वामी गोविन्ददेव गिरी जी व चेन्नई से चिन्मय मिशन के प्रमुख स्वामी मित्रानंद जी भी शामिल थे। जिसमें मैंने "Strengthening Our Knowledge and Traditions" सत्र में "Promoting Formal Sanskrit Education amongst Women" इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

यह देखकर मुझे सुखद अनुभूति हुई कि इस विशाल कार्यक्रम के मुख्य आयोजक पूज्य स्वामी विज्ञानानंद जी जो 'विश्व हिन्दू परिषद' के संयुक्त महासचिव हैं, उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को सम्मान देते हुए उन्हें समाज के अग्रणी महापुरुषों में विशेष रूप से स्मरण किया और कहा - "In the year 2023-2024 we'll commemorate the bicentenary of the birth of Maharshi Dayanand Saraswati. में Maharshi Dayanand Saraswati Hall नाम दिया गया था। मेरा वक्तव्य भी इसी सभागार में था जो वहाँ उपस्थित ऋषि की विचारधारा एवं आर्य जगत् की कदाचित् एकमात्र वक्ता के रूप में मेरे लिए गर्व और हर्ष की बात थी।

मेरा वक्तव्य 25 नवंबर के सत्र में हुआ। मैंने तीन मुख्य बिन्दुओं भारतीय संस्कृति का महत्व, देश निर्माण में गुरुकुलों की भूमिका तथा संस्कृत की औपचारिक शिक्षा पर अपने विचार रखे। अपने वक्तव्य के प्रारंभ में मैंने कहा कि यह आयोजन हिन्दुओं के लिए है। इसलिए मैं हिन्दुओं की अधिकृत भाषा हिन्दी में ही अपना वक्तव्य प्रस्तुत करूँगी। इस विचार को सभी ने बहुत पसन्द किया। तत्पश्चात् सम्मेलन में मैंने मुख्य रूप से निम्न विचार प्रस्तुत किए-

हमारे देश भारतवर्ष की संस्कृति सबसे पुरातन एवं विश्ववरणीया संस्कृति है। यह संस्कृति दुःखों के दावानल में कराहती हुई मनुष्य जाति के लिए संजीवनी बूटी है। भोगों की ज्वाला में जलती हुई मानवता के लिए शीतल लेप है और युद्धों की विभीषिका से संत्रस्त सभ्यताओं के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश है। जिस पुरातन संदेश को जी-20 सम्मेलन में शामिल सदस्य देश भारत से पुनः "One world one family" के रूप में भारत से सीख कर गए। इस संस्कृति की प्रयोगशाला थे गाँव-गाँव में चल रहे वे लाखों शिक्षा के केंद्र गुरुकुल, जहाँ प्रातः शय्योत्थान के पश्चात् ही 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' के मंगलघोष के साथ ही बच्चों सिद्ध हैं। यही सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् भारतीय संस्कृति का सार है। ऐसी सुपरिष्कृत संस्कृत भाषा को जन-जन तक प्रचारित करना सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा आत्म परिष्कार के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि भाषा संस्कृति का बोध कराती है।

स्कूली शिक्षा के रूप में संस्कृत पढ़ाने का प्रयोजन यही है कि संस्कृत वाङ्मय में निहित विज्ञान, गणित, शिल्प, कला, दर्शन, समाज, राजनीति आदि विषयों से हमारा परिचय हो व भविष्य में उपयोगी शोध किए जाएं। क्योंकि संस्कृत केवल पौरोहित्य एवं कर्मकांड की ही भाषा नहीं है अपितु यह तो ज्ञान-विज्ञान की भाषा है। जैसे कि छान्दोग्योपनिषद् में महर्षि नारद ऋषि सनत्कुमार के समक्ष अपनी अधीत विद्याओं का परिचय देते हुए कहते हैं- 'ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पंचमं वेदानां वेदं पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्पदेवजनविद्याम् एतद्भगवोऽध्येमि।' प्राचीन काल से ही हमारा देश गणित विद्या, भू विज्ञान, आयुर्वेद विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, शस्त्रास्त्र विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, कृषि विज्ञान, विमान विज्ञान आदि विद्याओं में धनी रहा है। यही कारण है कि जो विदेशी भारत को सभ्यता का पाठ पढ़ाने का दंभ करते थे वही इसकी आत्मा संस्कृत के प्रशंसक बन गए। सुप्रसिद्ध प्राच्यविद् तथा संस्कृत के अनन्य उपासक विल्सन ने लिखा है-

'न जाने विद्यते किन्तन्माधुर्यमत्र संस्कृते।
सर्वदैव समुन्मत्ताः येन वैदेशिका वयम्।।'

यह मेरा परम सौभाग्य था कि मेरे पिताजी ने समग्र क्रांति के जनक महर्षि दयानन्द सरस्वती के कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन किया था। वहाँ उन्होंने पाया कि किस प्रकार ऋषि दयानंद बालकों एवं बालिकाओं की समान शिक्षा पर बल देते हैं तथा सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में कहते हैं कि बालक और बालिकाओं के पृथक्-पृथक् गुरुकुल बनाए जाने चाहिए। गार्गी आदि प्राचीन ऋषिकाओं के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उनकी उच्च शिक्षा की पैरवी करते हैं। इसी से प्रेरणा लेकर मेरे पिताजी ने मुझे शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरुकुल भेजा।

गुरुकुल में पढ़ते हुए मैं संस्कृत शास्त्रों में वर्णित नारी की उच्च सामाजिक स्थिति को देखकर बहुत प्रभावित हुई। मैंने पाया कि वेद, उपनिषद, रामायण, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में सर्वत्र नारी को श्रद्धा की दृष्टि से देखा गया है। वेदों की नारी देवी है, विदुषी है, वीरांगना है, वीरों की जननी है, आदर्श माता है, कर्तव्यनिष्ठ धर्मपत्नी एवं घर की साम्राज्ञी है। वेद नारी को 'पुरन्धिर्योषा' कहता है अर्थात् नारी नगराध्यक्षा है, वेद की नारी कहती है- 'अहं केतुरहं मूर्द्धा' मैं राष्ट्र का मस्तक हूं, मैं राष्ट्र की ध्वजा हूं। जैसे ध्वजा को नहीं झुकाया जाता, उसके सम्मान को नहीं गिराया जाता, उसी प्रकार नारी के सम्मान को नहीं गिराया जाता। राष्ट्र की ध्वजा को झुकाने पर जो परिणाम होंगे, वही परिणाम नारी के अपमान से होंगे और कहा गया - 'अहमुग्रा विवाचनी' अर्थात् मैं इस न्यायालय की केवल अधिवक्ता ही नहीं

- *शेष पृष्ठ 6 पर*

आओ चलें टंकारा – सम्पूर्ण विश्व

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 2

200 वां जन्म स्मरणोत्स

महर्षि दयानन्द सरस्वती

10-11-12 फरवरी, 2024 (शनि-रवि-सोम)

माघ, शुक्ल पक्ष १-२-१ वि.२०८०

हम सबके जीवन का ऐतिहासि

आर्यजनों, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200
द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर किसी को
ज्योति पर्व – स्मरणोत्सव महासम्मेलन को भव्य
आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्याल

आयोजन की उपरोक्त तिथियों 10-11-12 फरवरी में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें

समस्त साथियों, अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं सहित सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ कर लें

महर्षि द
जयन्ती के
को सफल

टंकारा पहुंचने हेतु साधन, मार्ग एवं उपलब्ध व्यवस्था/सुविधाएं

हवाई मार्ग – टंकारा के निकटतम हवाई अड्डा राजकोट है। राजकोट हवाई अड्डे से टंकारा की दूरी 40 किलोमीटर है। दूसरा निकटतम हवाई अड्डा अहमदाबाद है जहां से टंकारा लगभग 250 किलोमीटर है। देश के लगभग सभी स्थानों / हवाई अड्डों से इन दोनों जगह की कनेक्टिविटी है तथा इन दोनों ही स्थानों से टंकारा पहुंचने का राजमार्ग बहुत अच्छा है। राजकोट का किराया काफी अधिक होगा। अतः अहमदाबाद की टिकट लेकर टैक्सी अथवा डीलक्स बस से पहुंचना भी एक सरल माध्यम हो सकता है।

रेल मार्ग – टंकारा पहुंचने के लिए सबसे निकटवर्ती रेलवे स्टेशन राजकोट ही है। यह स्टेशन टंकारा से 45 कि.मी. की दूरी पर है। यहां से टंकारा के लिए लगातार टैक्सी और सरकारी एवं प्राइवेट बसों की सेवा संचालित हैं। कार्यक्रम के दिनों में हमारा प्रयास होगा कि राजकोट रेलवे स्टेशन से टंकारा आयोजन स्थल तक सरकारी बसों की विशेष व्यवस्था हो जाए, जिससे और भी आसानी रहे। अतः तुरन्त रेलवे टिकट ले लें, चाहे कितनी ही वेटिंग में मिले। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

सड़क मार्ग – टंकारा से 500-600 किमी. की दूरी (गुजरात के निकटवर्ती – राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र) में रहने वाले महानुभाव अपनी-अपनी आर्य समाज/संस्था की ओर से बसों की व्यवस्था करके भी सामूहिक यात्रा का आयोजन कर सकते हैं।

भोजन व्यवस्था – टंकारा में आयोजन स्थल पर 9 फरवरी से 12 फरवरी की रात्रि तक भोजन की पर्याप्त व निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। जो महानुभाव उसके अतिरिक्त अन्य व्यवस्था लेना चाहें उनके लिए सशुल्क स्टाल भी उपलब्ध होंगे, जिन पर व्यवस्थानुसार भोजन/नाश्ता/फास्टफूड/मिष्टान/आदि का आनन्द भी लिया जा सकता है।

आवास व्यवस्था – टंकारा पहुंचने वाले समस्त आर्यजनों, श्रद्धालुओं के लिए आयोजन स्थल के साथ-साथ स्थानीय विद्यालयों, धर्मशालाओं, समाजवाड़ियों (पंचायती विवाह केन्द्रों) जो बहुत साफ-सुथरे और बेहतर व्यवस्था वाले हैं, में प्रत्येक व्यक्ति के लिए बैडिंग की पूर्णतया निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी।

-: निवेदक :-

सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पद्मश्री पूनम
दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा एवं

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उडीसा), धर्मपाल आर्य (दिल्ली), सुदर्शन शर्मा (पंजाब), राधाकृष्ण आर्य (हरियाणा), प्रकाश आर्य (म.
भारतभूषण त्रिपाठी (झारखण्ड), योगमुनि (महाराष्ट्र), ऋषिमित्र वानप्रस्थी (कर्नाटक), जगदीश प्रसाद केडिया (बंगाल), संजीव चौ
देवेन्द्रपाल वर्मा (उ. प्रदेश), अरुण चौधरी (जम्मू-कश्मीर), दीपक ठक्कर (गुजरात), सत्यानन्द आर्य (परोपकारिणी), अशोक
सुरेन्द्र रैली (दिल्ली), विनय आर्य (दिल्ली)

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति, महर्षि दयानन्द सर

सभी पाठकों, अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि सोशल मीडिया – व्हाट्सएप्प, फेसबुक

में गूंजेगा दयानन्द का जयकारा – आओ चलें टंकारा

200वीं जयन्ती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

ोत्सव–ज्ञान ज्योति पर्व
य महासम्मेलन

जन्मभूमि, टंकारा, जिला–राजकोट (गुजरात)

क अवसर – आइऐ, इस महान अवसर के साक्षी बनें

वां जन्मोत्सव एक ऐतिहासिक अवसर है। किसी महापुरुष की जन्म शताब्दी अथवा भी जीवन में दोबारा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। अत: इस अवसर पर आयोजित इस ज्ञान एवं ऐतिहासिक बनाने के लिए समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, प्रमुख आर्य संगठनों, यों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों से अनुरोध है कि –

यानन्द सरस्वती जी की 200वीं ऐतिहासिक स्मरणोत्सव समारोह न बनाने में अहम् भूमिका निभाएं

अपना रेलवे आरक्षण तुरन्त करा लें, चाहे कितनी भी वेटिंग हो। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, ग्रुप में कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था – टंकारा में स्थानीय एवं कुछ दूरी पर मोरबी और राजकोट में अच्छी क्वालिटी के होटलों की व्यवस्था है। जहां उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार दो व्यक्तियों हेतु 1500/- रुपये से 5000/- रुपये राशि पर कमरे बुक कराए जा सकते हैं। होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था प्राप्त करने हेतु **श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759)** एवं **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)** से सम्पर्क करें। यदि आप होटल/ सशुल्क व्यवस्था में रहना चाहते हैं तो शीघ्र (अभी आधी राशि) भेजकर होटल के कमरे बुक करवा लें, शेष राशि यात्रा से पूर्व/टंकारा पहुंचते ही अवश्य जमा करा देवें।

गणवेश – सभी आर्यजन सफेद कुर्ता, पजामा-धोती और संतरी पगड़ी या टोपी पहनकर इस महत्वपूर्ण उत्सव के साक्षी बनें। महिलाएं क्रीम या पीली भारतीय परंपरा की साड़ी/वस्त्र धारण करके समारोह की गरिमा/शोभा बढ़ाएं। सम्पूर्ण यात्रा एवं समारोह में टोपी/पगड़ी/पीत-वस्त्र अवश्य ही धारण करके रखें। ओम का बैज या 200वीं जयन्ती के लोगो का बैज अवश्य लगा कर रखें।

मौसम – गुजरात में टंकारा क्षेत्र में इन दिनों मौसम बहुत सुहावना रहेगा। केवल रात्रि में हल्का गर्म स्वेटर आदि की आवश्यकता हो सकती है, अन्यथा दिन में पंखे आदि चलते हैं। तापमान 30 डिग्री और 25 डिग्री के बीच रहेगा।

भ्रमण – टंकारा यात्रा के दौरान जो महानुभाव सम्मिलित होते हैं, वे भ्रमण आदि के लिए भी जाना चाहेंगे तो आसपास दर्शनीय स्थान द्वारका, गिर के वन, स्टैचू आफ यूनिटी, चम्पानेर का किला, साबरमती आश्रम, रानी की वाव, पिरोटन इजलैंड, कच्छ का रण, जरवानी वाटरफाल, सरदार सरोवर डैम, खम्भेलिया केव्ज, रामपारा वाइल्डलाइफ सेंचुअरी हैं। वहां की भ्रमण व्यवस्था किसी ट्रैवल एजेंट से करवाई जा सकती है। आप अपनी यात्रा की ट्रेन आदि की बुकिंग करवाते समय इसका भी विशेष ध्यान रख सकते हैं।

एक अनुरोध – जिस महान आत्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर हम जा रहे हैं, उन्होंने न जाने कितने कष्ट उठाएं, हमें हमारा आज देने के लिए। अतः यात्रा में कुछ कष्ट सम्भव है, हमारी ओर से पूर्ण व्यवस्थाएं की गई हैं, फिर भी सम्भव है कि कुछ परेशानी या कष्ट हो। स्वयं को इस कार्यक्रम का आयोजक समझकर अपने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्थाएं बनाएं, ऐसा हमारा निवेदन है।

सूरी, प्रधान
डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी

सुरेन्द्र कुमार आर्य
अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

भारत), वेद प्रकाश गर्ग (मुम्बई), किशनलाल गहलौत (राजस्थान), सत्यवीर शास्त्री (विदर्भ), डॉ. रामकुमार पटेल (छत्तीसगढ़), ीरसिया (बिहार), महेन्द्र सिंह राजपूत (असम), डी.पी. यादव (उत्तराखण्ड), प्रबोधचन्द्र सूद (हिमाचल), एस. के. शर्मा (प्रादेशिक), आर्य (उदयपुर), गोपाल बाहेती (अजमेर), जोगेन्द्र खट्टर (द.से.संघ), अजय सहगल (टंकारा), योगेश मुंजाल (टंकारा),

स्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, समस्त प्रमुख आर्य संगठनों एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में माननीय अधिकारीगण

क, एक्स, टेलिग्राम, ब्लॉग आदि पर इसका प्रचार करें और अपने संस्थान के नोटिस बोर्ड पर भी लगा दें

पृष्ठ 3 का शेष

भारतीय संस्कारों की आत्मा है - गुरुकुलीय शिक्षा .....

हमारे देश भारतवर्ष की संस्कृति सबसे पुरातन एवं विश्ववरणीया संस्कृति है। यह संस्कृति दु:खों के दावानल में कराहती हुई मनुष्य जाति के लिए संजीवनी बूटी है। भोगों की ज्वाला में जलती हुई मानवता के लिए शीतल लेप है और युद्धों की विभीषिका से संत्रस्त सभ्यताओं के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश है। जिस पुरातन संदेश को जी-20 सम्मेलन में शामिल सदस्य देश भारत से पुन: "One world one family" के रूप में भारत से सीख कर गए। इस संस्कृति की प्रयोगशाला थे गाँव-गाँव में चल रहे वे लाखों शिक्षा के केंद्र गुरुकुल, जहाँ प्रात: शय्योत्थान के पश्चात् ही 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:' के मंगलघोष के साथ ही बच्चों में विश्व कल्याण की भावना को भर दिया जाता था। भारत के संस्कार की आत्मा हैं ये गुरुकुल जहाँ संस्कृति की उपासना ही आधार तत्त्व है और उस संस्कृति का मूल है देववाणी संस्कृत।

अपितु न्याय करने वाली न्यायाधीश हूं। रामायण के किष्किन्धा कांड के एक वर्णन 'तत: स्वस्त्ययनं त्वा मन्त्रविद् विजयैषिणी' के अनुसार रामायण काल की वनवासिनी स्त्रियाँ भी स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का पाठ करती थीं। बृहदारण्यक उपनिषद् में हम महाराजा जनक की सभा में ब्रह्मवादिनी गार्गी को महर्षि याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ करते हुए देखते हैं। इन सब बातों ने मुझे बचपन में बहुत अधिक प्रभावित किया और मैंने सोचा कि यदि इन ग्रंथों में वर्णित नारी की उदात्त सामाजिक स्थिति से वर्तमान नारी समाज को परिचित कराना है तो बालिकाओं को विद्यालय स्तर पर ही संस्कृत की शिक्षा दी जानी चाहिए।

साथ ही हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि संस्कृत के साथ-साथ अन्य विषयों के शिक्षण की व्यवस्था भी करनी चाहिए क्योंकि केवल संस्कृत के शास्त्रीय ज्ञान से भी बात नहीं बन पाएगी। दोनों को साथ लेकर चलना होगा। इसके अनेक लाभ हैं- संस्कृत के विशेष अध्ययन के साथ अन्य विषयों के सामान्य ज्ञान से ही शिक्षा की पूर्णता होगी तथा संस्कृत का अध्ययन व्यावहारिक बनेगा। वैदिक वाङ्मय में छिपे विज्ञान के शोध हेतु भी संस्कृत के छात्रों को आधुनिक विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन से जोड़ना बहुत आवश्यक है। संस्कृत के साथ इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, मानव विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन से छात्र शास्त्रीय ग्रंथों एवं पुरातात्विक अभिलेखों को उनके सही संदर्भों में समझ पाएंगे। संस्कृत व्याकरण के अध्ययन से छात्रों में गणितीय संक्षिप्तता का विकास होता है तथा बुद्धि तीव्र होती है। अष्टाध्यायी मानव मस्तिष्क की सर्वोत्कृष्ट रचना है। प्रत्याहारों, इत्संज्ञाओं जैसी कोड लैंग्वेज के माध्यम से व्याकरण को संक्षिप्ततम रूप में भी पूर्णता प्रदान की ग है। ऐसे सूत्रबद्ध संक्षिप्त नियम छात्र की विश्लेषण क्षमता को तीक्ष्ण और सटीक बनाते हैं। इसके अतिरिक्त अतीत की सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने का एक गौरवपूर्ण माध्यम है संस्कृत।भारतीय पारंपरिक साहित्य, धर्म, विचारधारा, इतिहास एवं सभ्यता के अध्ययन के लिए छात्रों को विद्यार्थी काल में ही संस्कृत पढ़ाना आवश्यक है।

संस्कृत यदि रोजगारपरक भाषा न भी बन पाए तब भी संस्कार की भाषा के रूप में संस्कृत को नैतिकता व मानव मूल्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भी पढ़ाया जाना चाहिए(क्योंकि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत मानव के सभी संस्कार संस्कृत में ही होते हैं। संस्कृत में लिखे वेद-शास्त्र, उपनिषद्, दर्शन आदि मनुष्य के चक्षुरूप हैं। इन्हीं के प्रकाश में मनुष्य धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को सिद्ध करता है। इसलिए भविष्य को ध्यान में रखते हुए हमें संस्कृत के लिए वैयक्तिक, सामाजिक एवं राजनैतिक हर संभव स्तर पर प्रयास करना होगा। विभिन्न स्थानों पर संचालित गुरुकुलों के माध्यम से आज भी ऐसे अनेक प्रयास हो रहे हैं। निदर्शन रूप में ऐसे ही एक प्रयास का नाम है' श्रीमद्दयानंद कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा,' जिसकी स्थापना 6 मार्च 1988 को उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले के चोटीपुरा ग्राम में हुई। संस्था की स्थापना का उद्देश्य ग्रामीण अंचल की बालिकाओं को संस्कृत के माध्यम से वैदिक संस्कारों से युक्त प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा प्रदान कर उन्हें स्वावलंबी बनाना है। मानव को दिशा देने वाली मातृशक्ति के जीवन में एक नया अध्याय लिखने का यह एक विनम्र प्रयास है।

प्रारंभ में ग्रामीण परिवेश में संस्कृत व संस्कृति के प्रचार-प्रसार का अभाव व असुरक्षा का वातावरण होने से केवल छह बालिकाओं का प्रवेश हुआ परंतु जब हमने इसमें पूर्ण मनोयोग के साथ अपना शत-प्रतिशत परिश्रम किया तो बहुत शीघ्रता से परिणाम सामने आने लगे और प्रतिवर्ष लगभग 50 से 100 बालिकाओं का प्रवेश होने लगा जिसके परिणामस्वरूप आज 16 प्रांतों की 1100 बालिकाएं पूर्ण आवासीय व्यवस्था में गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

संस्कृत की औपचारिक शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं ने विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्त की हैं। जैसे- संस्कृत के साथ अन्य विषयों के अध्ययन का ही यह फल है कि अब बालिकाएं UPSC, NET आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ साथ NEET एवं IIT&JEE के लिए भी अर्ह हो गई हैं। संस्कृत के साथ विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के प्रारंभ होने से संस्कृत के छात्रों के सभी क्षेत्रों में प्रवेश के मार्ग खुल गए हैं तथा अब संस्कृत के छात्र B-Tech, MBBS, CA, CS आदि में भी प्रवेश ले सकते हैं। इसी औपचारिक संस्कृत शिक्षा का ही परिणाम है कि एक बालिका ने UPSC की परीक्षा को संस्कृत विषय के साथ प्रथम प्रयास में ही आठवाँ रैंक लेकर उत्तीर्ण किया। पिछले 12 वर्षों में लगभग 175 बालिकाओं ने भारत की द्वितीय पात्रता परीक्षा NET+JRF को उत्तीर्ण किया। 75 बालिकाओं ने उच्चतम औपचारिक उपाधि Ph.D प्राप्त की तथा पचास बालिकाएं अभी भी शोध कार्य कर रही हैं। विगत 12 वर्षों में लगभग 340 बालिकाओं का सरकारी सेवाओं में चयन हुआ है। भारत के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान IIT मुंबई में दो बालिकाओं का शोध हेतु प्रवेश हुआ, जिनके शोध का विषय है पाणिनीय व्याकरण को मैथमेटिकल फंक्शंस के रूप में दर्शाना जो कंप्यूटर के एल्गोरिदम में डेटाबेस बनाने में सहायक होगा। दूसरा संस्कृत भाषा के संरचना संबंधी एवं अर्थ संबंधी डेटाबेस को तैयार करना जो संस्कृत भाषा के पैटर्न को समझने और शोध करने में सहायक होगा। यह केवल संस्कृत के अध्ययन से ही संभव नहीं था।इसमें संस्कृत के साथ-साथ कंप्यूटर एवं अंग्रेज़ी का ज्ञान भी आवश्यक है जो वर्तमान में संस्कृत के बड़े स्तर पर प्रचार-प्रसार के लिए बहुत आवश्यक है।

बालिकाओं के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य विषयों के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों का संचालन भी किया जाता है जिसमें विशेष रूप से क्रीडा, योग, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि शामिल हैं। विगत वर्षों में गुरुकुल की बालिकाओं ने धनर्विद्या के माध्यम से ओलंपिक, एशियाड, कॉमनवेल्थ, वर्ल्ड कप व राष्ट्रीय खेलों में प्रतिभागिता की एवं 500 से अधिक पदक प्राप्त किए। योग प्रतियोगिताओं की विभिन्न विधाओं में छात्राओं ने अनेक सफलताएं प्राप्त कीं। NCC एवं NSS के माध्यम से गणतंत्र दिवस परेड व अन्य गतिविधियों का हिस्सा बनकर व्यक्तित्व विकास के अवसर प्राप्त कर रही हैं। राष्ट्रीय स्तर की शास्त्रीय प्रतियोगिताओं में अनेक बार स्वर्ण शलाका एवं स्वर्ण पदकों सहित अनेक पदक प्राप्त किए। सांस्कृतिक गतिविधियों में छात्राओं ने विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्त कीं। इन सब गतिविधियों का ही परिणाम है कि अनेक अभिभावक अपनी बालिकाओं को संस्कृत पढ़ाने के लिए भेज रहे हैं जिसके कारण गुरुकुल में प्रवेश हेतु कॉम्पटिशन पैदा हो गया है और कठोर प्रवेश परीक्षा से बालिकाओं का प्रवेश करना पड़ता है। ये सभी उपलब्धियाँ संस्कृत के संवर्द्धन में प्रचुर मात्रा में सहायक हो रही हैं। इस प्रकार सरकारी अनुदानों व आधुनिक संसाधनों के अभाव में भी हम 'गुरुकुलं जयतात् जगतीतले'- गुरुकुल संस्कृति की सर्वत्र विजय हो, इस कामना को पूर्ण करने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं।

पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव वाले इस माहौल में बालिकाओं में सांस्कृतिक मूल्यों की महत्ता स्थापित करना एवं अंग्रेज़ी के प्रति विशेष आकर्षण रखने वाली युवा पीढ़ी को संस्कृत शिक्षण हेतु प्रोत्साहित करना वस्तुत: चुनौतीपूर्ण कार्य हैं, लकतु हम इन चुनौतियों से पार पाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

इस प्रकार वर्तमान में गुरुकुल संस्थाओं के माध्यम से संस्कृत के पारंपरिक शास्त्रीय अध्ययन का आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ समन्वय देखकर उपस्थित श्रोताओं को अत्यंत हर्ष का अनुभव हुआ। सभी को महसूस हुआ कि वर्तमान में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के क्रियान्वयन का यही एक व्यावहारिक तरीक़ा है तथा इसे और अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

विश्व हिन्दू काँग्रेस के संस्थापक श्रद्धेय स्वामी विज्ञानानंद जी का नेतृत्व व भूमिका वस्तुत: स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है। उनके कुशल संगठनात्मक प्रबंधन का ही यह परिणाम था कि बैंकॉक में हिन्दुओं का यह अभूतपूर्व विश्व स्तरीय आयोजन संभव हो सका। सम्मेलन के सभी सत्रों के सफल संचालन से लेकर उपस्थित वक्ताओं व प्रतिनिधियों के आवागमन, भोजन, आवास आदि की उत्तम व्यवस्था स्वयं ही इसके पीछे छिपे श्रम व सूझबूझ का परिचय दे रही थी। कार्यक्रम के समर्पित व सुशील स्वयंसेवकों का उत्साह प्रशंसनीय था। बैंकॉक में आयोजित इस काँग्रेस में यह देखने को मिला कि किसी अन्य देश में भी इतना बड़ा व भव्य कार्यक्रम इतनी उत्तम व्यवस्था के साथ सम्पन्न किया जा सकता है।

सम्मेलन की समाप्ति पर स्थानीय लोगों से बातचीत व कुछ मुख्य पर्यटन स्थलों जैसे ग्रैंड पैलेस बैंकॉक, फ़्लोटिंग मार्केट, बिग बुद्धा व अरुण वाट मंदिर आदि के भ्रमण के आधार पर मैंने पाया कि थाइलैंड एक ऐसा देश है जहां साठ-सत्तर प्रतिशत परंपराएँ विशुद्ध हिन्दू परंपराएं ही हैं। देव दीपावली के पर्व को लोग धूमधाम से मना रहे थे। वहां की भाषा पालि व प्राकृत के समान ही संस्कृत के अति निकट है। रामायण वहां का राष्ट्रीय ग्रंथ है तथा राजाओं को 'राम' की उपाधि दी जाती है। थाइलैंड के वर्तमान राजा अपने पिता भूमिबोल अतुल्यतेज 'राम नवम' के पश्चात् 'राम दशम' की उपाधि से अलंकृत हैं। बैंकॉक के अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट का नाम स्वर्णभूमि एयरपोर्ट है, जहां समुद्र मंथन की कथा को मूर्तिमान रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार यह यात्रा सनातन संस्कृति के पुनरुत्थान की दिशा में बढ़ते दृढ कदम की साक्षी बनी तथा इससे भविष्य की अनेक संभावनाओं की आशा जगी।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वयं स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज आर्य नगर पहाड़गंज एवं अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के तत्वावधान में 97वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह 23 दिसम्बर, 2023 को प्रात: 9 बजे से आयोजित किया जा रहा है। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। - ***विजय कपूर, प्रधान***

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

Pandit Ambadatt Vaidya and Pandit Hira Vallabh Parvati of Anup city got ready for debate over Idol worship.

Pandit Ambadat could not face Swamiji and asked some other Pandit to take part in debate. Pandit Parvati was defeated. So, asper his earlier decision about defeat, he threw away idol of Shaligram into Ganga. The result was that other people also started throwing the idols into Ganga. They came to Swamiji for getting prasad of Gayatri and Yagyopaveet. Non stop yagya was started on bank of Ganga. People got their right to worship after centuaries and chanted slogans in favour of Rishi "Rishi Dayanand ki Jai".

After travelling for some days Swamiji reached back Karnavas on 20 May, 1868 and stayed in his cottage. He was quite fearless. If he had not been fearless, he could not have stopped in the work of Reform. Work of reform can be done by 'Lions' only and not by jackals. The person who is not afraid of criticism, attack by some mad person or some powerful weapon, he can not try to remove the bad customs prevailing for centuries. Only he can do such pious work who is not afraid of criticism or weapons. Swami Dayanand had decided taught Arya Society to get rid of bad customs. He was determined to bring such situation that people should get their rights from the Mahants and Purohits afer centuries. If Rishi had not been a 'LION', he could not have challenged the heads of prevailing different religions.

An incident shows his fearlessness in Karnavas. A very richman of Bareli Rao Karan Singh reached Karnavas for taking bath in Ganga (Ganga snan). He was the disciple of Vaishnacharya Rangacharya of Vrindavan. He used to have tilak on his forhead. He reached Swamiji's cottage after listening about praise for him. He was very angry by nature. He had heard that Swamiji condemned use of Tilak, so he was very angry about that. Swamiji offered him an asan (seat) near his asan. Karna Singh angrily said that he would sit on (Swamiji's) his asan. So, Swamiji offered a part of his asan for him. So, there was no clash. Krana Singh, who was determined to have some clash, was disappointed. Then he made a new plan. He asked Swamiji, 'Do you not recognise Ganga's sacredness?'

Swamiji replied, 'I recognise Gangaji as much as it is'

Karna singh said, 'How much?'

Swamiji said that for him and people like Gangaji is just a 'Kamandlu' (a pot of water).

Then Karan Singh recited some Shlokas in praise of Ganga.

Swamiji remarked 'All this is not reality, it is false rather. It is just a drinking water. You can't get Moksha (salvation). Moksha is dependant on our actions (Karma). Popes have misled you' Then looking at the Tilak on his forehead. 'Why have you accepted This Tilak, the sign of beggars?'

Karan Singh, 'you won't be able to talk to our Swamiji. You are equal to worm before him. People like you carry their shoes.'

Swamiji replied with a smile, 'call your Guruji for debate. If he is unable to come here, I can ready to go him.'

To be Continue.....

पृष्ठ 2 का शेष

कितना खतरनाक है ये 12 सैकेण्ड का जहर

इसे समझने के लिए थोडा पीछे चलिए एक जमाना था। जब बच्चें आपस में मिलकर नोट्स बनाते थे। अपने नम्बर चेक करते थे। वो एक दूसरे से परीक्षा सेलेबस, सब्जेक्ट सम्बन्धित बातें किया करते थे। लेकिन अब रील की बीमारी अब इतना आगे बढ़ चुकी है कि बच्चें नोट्स बनाने के बजाय रील बना रहे हैं। और परीक्षा के अंकों की जगह लाइक और व्यूज देख रहे हैं।

अगर लाइक और व्यूज उसकी अपेक्षा से कम आते हैं तो क बार यूजर्स ब्युज के लिए स्टंट का रास्ता चुनता है। दिल्ली के सिग्नेचर ब्रिज पर ऐसी घटनाएं प्रतिदिन घटती हैं। वहां बाइक से रील बनाते वक्त युवा खुद तो हादसे का शिकार होते ही हैं, दूसरों को भी लपेट लेते हैं। ऐसे मामलों को देखते हुए हॉलिस्टिक वेलनेस सेंटर की डॉ. रेखा आहूजा बताती हैं कि ज्यादा देर तक शॉर्ट विडियोज देखने में हम रिपीटेड कंटेंट देखते हैं, इसमें ट्रेंड के हिसाब से कंटेंट बनते हैं, सभी एक जैसे होते हैं, जैसे, कोई गाना ट्रेंड कर रहा है तो उस गाने पर ढेरों लोगों ने एक ही तरह के डांस स्टेप्स में विडियोज बनाए होते हैं, कोई नया डायलोग आये तो उसपर भी बस चेहरे बदलते है कंटेंट वही रहता है। लेकिन लोग देखते चले जाते है जो माइंड की क्रिएटिविटी को बुरी तरह प्रभावित करता है।

घटना राजस्थान के पाली की है। यहाँ एक युवा योगेश को भी रील बनाने का बहुत शौक था। इंस्टाग्राम पर रोजाना एकाध रील अपलोड करता था, व्यूज, कमेंट मिलने पर खुश होता था। रील बनाने में वह इतना डूबा रहता था कि पढ़ाई तो दूर, वो खाना-पीन तक भूल जाता था। एक रोज उसके पिता ने उसका फोन छीन लिया, योगेश ने गुस्से में आकर आत्महत्या कर ली। दूसरा पिछले दिनों फर्रुखाबाद के तराई इलाके में एक 24 साल की लड़की ने इन्स्टा पर रील बनाने से रोकने पर अपने दो छोटे भाइयों पर हमला कर दिया था। उनमें से एक का गला घोटने का भी प्रयास किया। सिर्फ यही नहीं थोड़े दिन पहले दिल्ली महिला आयोग ने पुलिस को नोटिस जारी रील्स बनाने वाली एक महिला के खिलाफ एफआईआर करने की मांग की है, इस महिला पर आरोप है कि वह अपने 10 -12 साल के बेटे के साथ अश्लील और उत्तेजक भावभंगिमाओं के साथ नाचने वाले वीडियो बनाती थी।

यानि अब लोग लोकप्रियता हासिल करने के लिए बेशर्मी की सभी हदें पार कर रहे हैं। वीडियो पर महज व्यूज़ हासिल करने के उद्देश्य से शॉर्ट वीडियो के जरिए अश्लील और बेहद ही घटिया कॉन्टेंट भी परोसा जा रहा है। कई लोग तो व्यूज बढ़ाने के लिए अपने छोटे-छोटे बच्चों को भी रील्स पर एक्सपोज़ कर देते हैं, रील्स में हमने कितनी ही बार देखा है कि माताएं अपनी नाबालिग बेटों और बेटियों से वीडियो बनवाती हैं। कई लोगों ने तो उसे पैसे कमाने का माध्यम ही बना लिया है, अब आप सोचिए कि जो नाबालिग लड़की रील्स के लिए नाच रही है वो कैसे समझ पाएगी की उसका जीवन किस ओर जा रहा है और असल में उसे किस और जाना चाहिए? उन्हें सोचना होगा कि आज संसार में शिक्षा, समाज, विज्ञान, लेकर जिन महान लोगों का हम नाम लेते है क्या वो रील्स बनाकर महान बने थे? और सोचिये क्या यह 12 सेकंड का जहर कहीं आपको तुलना, गुस्सा या अवसाद की तरफ तो नहीं ले जा रहा है?

- सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ...

इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू जी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि का जन्मोत्सव पूरे भारत का महोत्सव है, वे केवल आर्य समाज के ही नहीं पूरे भारत और विश्व के महर्षि थे। उन्होंने कहा कि उनके 200वें जन्मोत्सव में सम्मिलित होना मेरा सौभाग्य होगा।

आर्यसमाज के प्रतिनिधि मंडल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी एवं टंकारा ट्रस्ट के प्रधान पद्मश्री पूनम सूरी, 200वें जन्मोत्सव के लिए गठित ज्ञान ज्योति महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अन्तरंग सदस्य डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार सम्मिलित रहे। इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से महामहिम राष्ट्रपति जी को 200वीं जयन्ती का लोगो एवं स्मृति रूप में गायत्री मन्त्र का सुन्दर चित्र भेंट किया गया।

शोक समाचार

वैदिक विद्वान डॉ. रामप्रकाश जी का निधन

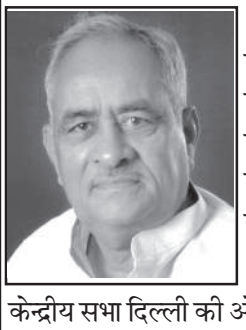

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, वक्ता, लेखक, सम्पादक, पूर्व राज्यसभा सांसद एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के पूर्व कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी का दिनांक 13 दिसम्बर, 2023 को 84 वर्ष की आयु में कुरुक्षेत्र में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिल्ली सभा, सार्वदेशिक सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य जी ने पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 दिसम्बर, 2023 से रविवार 17 दिसम्बर, 2023

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 13-14-15/12/2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 दिसम्बर, 2023

ओ३म्

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, शिक्षाविद् आर्य समाज के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी

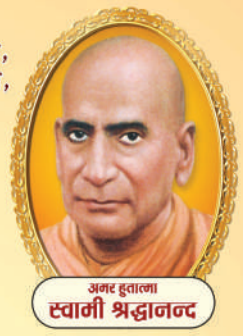

स्वामी श्रद्धानन्द

97 वाँ बलिदान दिवस

सोमवार 25 दिसम्बर 2023

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती के विशेष आयोजनों की श्रृंखला में

भव्य शोभायात्रा व सार्वजनिक सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

यज्ञ : प्रात: 8 से 9:30 बजे

शोभायात्रा का प्रारम्भ : प्रात: 10 बजे

सार्वजनिक सभा : मध्याह्न 12:30 से 3:30 बजे

रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार रैली	मनीष भाटिया	आर्य सतीश चड्ढा
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री
9810855695	9910341153	9313013123

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph : 011-43781191, 09650522778

E-Mail : aspt.india@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150,

मो. 09540040339

ऑन लाइन खरीदें

www.vedicprakashan.com

JBM Group

Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002

91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्योगिक क्षेत्र-1, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह